Class XII Session 2025-26
Subject - Hindi Core
Sample Question Paper - 1

निर्धारित समय: 3 घंटे **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश:

- निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए :-
- यह प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभाजित है।
- खंड - क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- खंड - ख में पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- खंड - ग में पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खंड क (अपठित बोध)

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (10)** **[10]**

जाति-प्रथा को यदि श्रम-विभाजन मान लिया जाए, तो यह स्वाभाविक विभाजन नहीं है, क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। कुशल व्यक्ति या सक्षम श्रमिक समाज का निर्माण करने के लिए यह आवश्यक है। कि हर व्यक्ति अपनी क्षमता उस सीमा तक विकसित करें, जिससे वह अपने पेशे या कार्य का चुनाव स्वयं कर सके। इस सिद्धांत के विपरीत जाति-प्रथा का दूषित सिद्धांत यह है कि इससे मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा उसकी निजी क्षमता का विचार किए बिना, दूसरे ही दृष्टिकोण; जैसे-माता-पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार पहले से ही अर्थात गर्भधारण के समय से मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है।

जाति-प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्व-निर्धारण ही नहीं करती, बल्कि मनुष्य को जीवनभर के लिए एक पेशे में बाँध भी देती है। भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखों मर जाए। आधुनिक युग में यह स्थिति प्रायः आती है, क्योंकि उद्योग-धंधे की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास और कभी-कभी अकस्मात परिवर्तन हो जाता है, जिसके कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है और यदि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनुष्य को अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता न हो, तो उसके लिए भूखों मरने के अलावा क्या चारा रह जाता है? हिंदू धर्म की जाति-प्रथा किसी भी व्यक्ति को ऐसा पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती है, जो उसका पैतृक पेशा न हो, भले ही वह उसमें पारंगत है। इस प्रकार पेशा-परिवर्तन की अनुमति न देकर जाति प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है।

(i) जाति-प्रथा किस प्रकार का श्रम-विभाजन है? (1)

क) स्वाभाविक

ख) मनुष्य की रुचि पर आधारित

ग) सामाजिक स्तर पर आधारित

घ) प्रशिक्षण पर आधारित

(ii) जाति-प्रथा का मुख्य दोष क्या है? (1)

क) यह पेशे का दोषपूर्ण पूर्व-निर्धारण करती है

ख) यह मनुष्य को सक्षम बनाती है

ग) यह तकनीकी विकास को प्रोत्साहित करती है

घ) यह रोजगार के नए अवसर प्रदान करती है

(iii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए - (1)

कथन (I): जाति-प्रथा मनुष्य को उसकी रुचि के अनुसार पेशा चुनने की स्वतंत्रता देती है।

कथन (II): जाति-प्रथा में पेशे का निर्धारण माता-पिता के सामाजिक स्तर के आधार पर होता है।

कथन (III): जाति-प्रथा में पेशा परिवर्तन की अनुमति नहीं होती।

कथन (IV): जाति-प्रथा कुशल श्रमिक और सक्षम समाज का निर्माण करती है।

गद्यांश के अनुसार कौन-सा/से कथन सही हैं?

क) केवल कथन (I) और (III) सही हैं।

ख) केवल कथन (II) और (III) सही हैं।

ग) केवल कथन (I), (III) और (IV) सही हैं।

घ) केवल कथन (II) और (IV) सही हैं।

(iv) जाति-प्रथा मनुष्य के पेशे का निर्धारण किस आधार पर करती है? (1)

(v) आधुनिक युग में जाति-प्रथा क्यों अनुपयुक्त हो जाती है? (2)

(vi) जाति-प्रथा से मनुष्य के पेशे को लेकर क्या समस्याएँ उत्पन्न होती हैं? (2)

(vii) जाति-प्रथा के सिद्धांत के अनुसार मनुष्य का पेशा कब से निर्धारित हो जाता है? (2)

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (8)** **[8]**

मेरे देश तेरा चप्पा-चप्पा मेरा शरीर है
तेरा जल मेरा मन है
तेरी वायु मेरी आत्मा है
इन सबसे मिलकर ही
तू बनता है मेरे देश,
मैं और तू- दो तो नहीं हैं
शरीर, आत्मा, मन
एक ही प्राणी के
स्थूल या सूक्ष्म अंग हैं
मैं इन्हें बँटने नहीं दूंगा
मैं इन्हें लुटने नहीं देंगा
मैं इन्हें मिटने नहीं दूंगा!

i. **कविता के अनुसार, "तेरा जल मेरा मन है" इस पंक्ति का क्या अर्थ है? (1)**

I. देश का जल कवि के भावनात्मक जीवन का हिस्सा है।

II. कवि अपने देश के जल को पवित्र मानता है।

III. देश का जल केवल भौतिक संसाधन है।

IV. कवि देश के जल को बचाने का संकल्प लेता है।

विकल्प:

क) कथन I और II सही हैं।

ख) कथन I, II और IV सही हैं।

ग) केवल कथन III सही है।

घ) कथन I और III सही हैं।

ii. **कवि ने अपने देश को किस प्रकार की संज्ञा दी है? (1)**

क) अलग-अलग भागों में बंटा हुआ

ख) एक ही प्राणी के अंगों के समान

ग) केवल प्राकृतिक संसाधनों से युक्त

घ) केवल सांस्कृतिक धरोहर से भरा हुआ

iii. **निम्नलिखित को सुमेलित करें और सही विकल्प चुनें: (1)**

कॉलम 1	**कॉलम 2**
I. जल	1. मन
II. वायु	2. आत्मा
III. शरीर	3. चप्पा-चप्पा

क) I - (1), II - (2), III - (3)

ख) I - (2), II - (3), III - (1)

ग) I - (1), II - (3), III - (2)

घ) I - (3), II - (1), III - (2)

iv. **कविता में 'शरीर, आत्मा, मन एक ही प्राणी के स्थूल या सूक्ष्म अंग हैं' से कवि क्या व्यक्त करना चाहते हैं? (1)**

v. **कविता में 'तेरी वायु मेरी आत्मा है' का क्या प्रतीकात्मक अर्थ है? (2)**

vi. **कवि अपने देश के किस रूप को बचाने की कसम खाते हैं, और क्यों? (2)**

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. **दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।** **[6]**

i. **हम अखबार क्यों पढ़ें** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए। **[6]**

ii. **नारी का सम्मान** विषय पर अनुच्छेद लिखिए। **[6]**

iii. **मन के हारे हार है, मन के जीते जीत** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए। **[6]**

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: (2 X 4 = 8)** **[8]**

i. पत्रकारिता के प्रमुख प्रकारों के नाम बताइए। **[2]**

ii. स्वच्छता अभियान पर एक फीचर तैयार कीजिए। **[2]**

iii. **सजग नागरिक** पर एक फीचर लिखिए। **[2]**

iv. रेडियो नाटक के लिए पात्रों की संख्या सीमित क्यों रखनी चाहिए? **[2]**

5. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)** **[8]**

i. विशेष लेखन के पाठकों की विशेषता लिखिए? **[4]**

ii. समाचार लेखन के संदर्भ में छह ककार कौन-कौन से हैं? उनके महत्त्व पर टिप्पणी कीजिए। **[4]**

iii. **संपादक के नाम पत्र** पर टिप्पणी कीजिए। **[4]**

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे-
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है?
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है?

i. बच्चे कैसे होंगे?

क) दुख में

ख) घर में

ग) प्रत्याशा

घ) सुख में

ii. बच्चे कहाँ से झाँकते होंगे?

क) आसमान से

ख) दरवाजे से

ग) शहर से

घ) नीड़ों से

iii. चिड़ियों के परों में क्या भरती है?

क) उड़ान | ख) गति
ग) तेजी | घ) चंचलता

iv. बच्चे किसकी प्रत्याशा में होंगे?

क) भाई की | ख) दोस्त की
ग) पिता की | घ) चिड़ियों की

v. दिन कैसे ढलता है?

i. जल्दी-जल्दी
ii. धीरे-धीरे
iii. मंद गीत से
iv. आस्य से

क) विकल्प (iii) | ख) विकल्प (iv)
ग) विकल्प (i) | घ) विकल्प (ii)

7. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिये:** **[6]**

i. छोटे चौकोने खेत को कागज़ का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है? **[3]**

ii. **उहाँ राम लछिमनहि निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी** **[3]**
तुलसीदास द्वारा रचित उपर्युक्त पंक्तियों का भाव स्पष्ट करते हुए अपने विचार व्यक्त कीजिए।

iii. **भाषा को सहूलियत** से बरतने से क्या अभिप्राय है? बात सीधी थी पर कविता के आधार पर बताइए। **[3]**

8. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

i. **पतंग** कविता में कवि ने प्रकृति का अनूठा चित्रण किया है। उसे अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए। **[2]**

ii. अपाहिज अपने दुख के बारे में क्यों नहीं बता पाता? **[2]**

iii. व्याख्या कीजिए- **[2]**
अट्टालिका नहीं है रे
आतंक-भवन
सदा पंक पर ही होता
जल-विलप्व-प्लावन

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

जाति-प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्व निर्धारण ही नहीं करती, बल्कि मनुष्य को जीवनभर के लिए एक पेशे से बाँध भी देती है। भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखा मर जाए। आधुनिक युग में यह स्थिति प्रायः आती है, क्योंकि उद्योग-धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास और कभी-कभी अकस्मात् परिवर्तन हो जाता है, जिसके कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है और यदि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनुष्य को अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता न हो, तो इसके लिए भूखा मरने के अतिरिक्त क्या चारा रह जाता है? हिंदू धर्म की जाति-प्रथा किसी भी व्यक्ति को ऐसा पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती है, जो उसका पैतृक पेशा न हो, भले ही वह उसमें पारंगत हो। इस प्रकार पेशा परिवर्तन की अनुमति न देकर जाति-प्रथा भारत में बेरोज़गारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है। (बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर)

i. गद्यांश के अनुसार जाति-प्रथा में लेखक ने क्या दोष देखा है?

क) पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने पर मनुष्य को भूखा मरना पड़ता है | ख) जीवनभर मनुष्य को एक पेशे में बाँध देती है
ग) सभी विकल्प सही हैं | घ) जाति-प्रथा जन्म से ही पेशा तय कर देती है

ii. मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता किस कारण पड़ती है?

क) निम्न वर्ग को घृणा की दृष्टि से देखे जाने के | ख) उद्योग-धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर

कारण | विकास के कारण

ग) प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण | घ) स्वयं को उच्च वर्ग में सम्मिलित करने के कारण

iii. पेशा बदलने की स्वतंत्रता के अभाव का क्या परिणाम होता है?

क) मनुष्य सदैव दूसरों को कोसता रहता है | ख) मनुष्य सदैव निम्न ही रहता है

ग) मनुष्य की निरंतर प्रगति होती है | घ) मनुष्य को भूखा मरना पड़ता है

iv. निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन (A): जाति-प्रथा मनुष्य को एक पेशे से नहीं बाँधती है।

कारण (R): हिन्दू धर्म की जाति-प्रथा कोई और पेशा नहीं चुनने देती है।

क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं। | ख) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

ग) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है। | घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

v. गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

i. जाति-प्रथा मनुष्य को एक ही पेशे से बाँध देती है।

ii. जाति-प्रथा पेशे का पूर्वनिर्धारण नहीं करती है।

iii. प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनुष्य को अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता नहीं होनी चाहिए।

उपरिलिखित कथनों में से कौन सही है/हैं?

क) केवल ii | ख) केवल i

ग) इनमें से कोई नहीं | घ) केवल iii

10. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[6]**

i. पहलवान लुट्टन के सुख-चैन भरे दिनों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। **[3]**

ii. भक्तिन ने महादेवी वर्मा के जीवन पर कैसे प्रभावित किया ? **[3]**

iii. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने शिरीष के सन्दर्भ में महात्मा गाँधी का स्मरण क्यों किया है? साम्य निरूपित कीजिए। **[3]**

11. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

i. लोभ के विषय में लेखक **जैनेंद्र कुमार** के क्या विचार हैं? **[2]**

ii. **गगरी फूटी बैल पियासा** इंदर सेना के इस खेलगीत में बैलों के प्यासा रहने की बात क्यों मुखरित हुई है? **[2]**

iii. जाति प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप नहीं मानने के पीछे डॉ. आंबेडकर के तर्क का उल्लेख कीजिए। **[2]**

12. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[10]**

i. स्कूली दिनों की कौन-सी आदत यशोधर बाबू आज भी नहीं छोड़ पाए थे? यह आदत किन मूल्यों को बढ़ाने में सहायक थी? **[5]**

ii. कविता के प्रति लगाव से पूर्व तथा उसके बाद अकेलेपन के प्रति **जूझ** के लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया और क्यों? स्पष्ट कीजिए। **[5]**

iii. मुअनजोदड़ो की नगर योजना आज की सेक्टर-मार्का कॉलोनियों के नीरस नियोजन की अपेक्षा अधिक रचनात्मक है- टिप्पणी कीजिए। **[5]**

उत्तर

खंड क (अपठित बोध)

1. (i) ग) सामाजिक स्तर पर आधारित

(ii) क) यह पेशे का दोषपूर्ण पूर्व-निर्धारण करती है

(iii) ख) केवल कथन (II) और (III) सही हैं।

(iv) जाति-प्रथा मनुष्य के पेशे का निर्धारण माता-पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार करती है।

(v) आधुनिक युग में जाति-प्रथा अनुपयुक्त हो जाती है क्योंकि उद्योग-धंधे की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास और परिवर्तन होता है, जिससे पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है।

(vi) जाति-प्रथा से मनुष्य के पेशे को लेकर समस्याएँ उत्पन्न होती हैं जैसे - मनुष्य को जीवनभर के लिए एक पेशे में बाँध देना, पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण भूखों मर जाना, और पेशा बदलने की स्वतंत्रता न होना।

(vii) जाति-प्रथा के सिद्धांत के अनुसार मनुष्य का पेशा गर्भधारण के समय से ही निर्धारित हो जाता है।

2. i. ख) कथन I, II और IV सही हैं।

ii. ख) एक ही प्राणी के अंगों के समान

iii. क) I - (1), II - (2), III - (3)

iv. कविता में 'शरीर, आत्मा, मन एक ही प्राणी के स्थूल या सूक्ष्म अंग हैं' से कवि यह व्यक्त करना चाहते हैं कि देश और व्यक्ति का सम्बन्ध एक अटूट और एकत्वपूर्ण होता है, जैसे शरीर, आत्मा, और मन मिलकर एक प्राणी बनाते हैं।

v. 'तेरी वायु मेरी आत्मा है' का प्रतीकात्मक अर्थ है कि देश की वायु (प्राकृतिक संसाधन) कवि की आत्मा (आत्मा की गहराई) का हिस्सा है, जो उसकी पहचान और अस्तित्व का अभिन्न हिस्सा है।

vi. कवि अपने देश के समग्र रूप को बचाने की कसम खाते हैं। वे देश के विभिन्न हिस्सों को एक साथ रखने और उसके विनाश या बिखराव को रोकने की कसम खाते हैं क्योंकि उनके लिए यह देश उनके शरीर, मन, और आत्मा का अभिन्न अंग है।

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।

(i) अखबार पढ़ना एक महत्वपूर्ण गतिविधि है जो हमें विषयवस्तु और रचनात्मक लेखों के माध्यम से कई लाभ प्रदान करती है। पहले, अखबार द्वारा प्रकाशित रचनात्मक लेख हमें सोचने के नए तरीके और दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। ये लेख हमारी सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करते हैं और हमारे विचारों को विस्तारित करने में सहायता करते हैं। दूसरे, रचनात्मक लेख हमें समाज, राजनीति, साहित्य, कला और विज्ञान के महत्वपूर्ण मुद्दों के बारे में जागरूक करते हैं। इन लेखों के माध्यम से हम समाज के विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श कर सकते हैं और सकारात्मक परिवर्तन के लिए कार्यगत उपाय खोज सकते हैं। अखबार पढ़ना हमें समाचार, जागरूकता और सृजनात्मक सोच का संचार करता है, जिससे हम सक्रिय, सूचित और संवेदनशील नागरिक बनते हैं।

(ii) **नारी का सम्मान**

नारी का सम्मान हमारे समाज की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। नारी, जो माँ, बहन, पत्नी और बेटी के रूप में हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है, उसे सम्मान देना हमारी संस्कृति और परंपराओं का हिस्सा है। भारतीय संस्कृति में नारी को देवी के रूप में पूजा जाता है, और यह मान्यता है कि जहां नारी का सम्मान होता है, वहां देवता निवास करते हैं।

नारी का सम्मान केवल एक सामाजिक आवश्यकता नहीं है, बल्कि यह एक नैतिक और मानवाधिकार का मुद्दा भी है। नारी को समान अधिकार और अवसर प्रदान करना समाज के विकास के लिए आवश्यक है। जब नारी को शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार के समान अवसर मिलते हैं, तो वह समाज के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

दुर्भाग्यवश, आज भी कई स्थानों पर नारी को उसके अधिकारों से वंचित रखा जाता है। घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, और यौन उत्पीड़न जैसी समस्याएं नारी के सम्मान को ठेस पहुँचाती हैं। इन समस्याओं का समाधान केवल कानूनों के माध्यम से नहीं, बल्कि समाज की सोच में बदलाव लाकर ही संभव है।

हमें नारी के सम्मान को सुनिश्चित करने के लिए अपने घरों से शुरुआत करनी होगी। बच्चों को बचपन से ही नारी का सम्मान करना सिखाना चाहिए। शिक्षा संस्थानों में भी नारी के अधिकारों और सम्मान के बारे में जागरूकता फैलानी चाहिए।

नारी का सम्मान करना केवल एक कर्तव्य नहीं, बल्कि यह हमारे समाज की प्रगति और समृद्धि के लिए भी आवश्यक है। जब नारी को उसका उचित सम्मान मिलेगा, तभी समाज में सच्ची समानता और न्याय की स्थापना हो सकेगी।

(iii) **"मन के हारे हार है, मन के जीते जीत"**

बेशक, आपकी जीत या हार को कोई और तय नहीं कर सकता है। यह खुद आपके ऊपर निर्भर करता है। कबीरदास ने बेहद प्रेरणादायी बात कही है कि "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। कहे कबीर हरि पाइए मन ही की परतीत"। अर्थात् जीवन में जय और पराजय केवल मन के भाव हैं। यानी जब हम किसी कार्य के शुरू में ही हार मान लेते हैं तो हमारी हार निश्चित हो जाती है। लेकिन अपनी मंजिल के लिए जब जूझते हैं, बार-बार गिर कर खड़े होते हैं तो हमारा आत्मविश्वास कई गुना बढ़ जाता है। तत्पश्चात् हमारी जीत सुनिश्चित हो जाती है।

पवित्र ग्रंथ गीता में भी लिखा गया है - **"यदि आपका मन वश में है, तो फिर यही आपका मित्र है और यदि आपका मन वश में नहीं है, तो फिर यही आपका शत्रु है"**। जीवन के किसी भी क्षेत्र और अवस्था में यदि असफलता हाथ लगती है, तो उसका कारण केवल मेहनत की कमी नहीं होता।

मेहनत को प्रेरित करने वाला तत्व संकल्पशक्ति या इच्छाशक्ति है। इतिहास साक्षी है कि कठिनाइयों का सामना अपने अदम्य साहस और अटूट विश्वास के बल पर किया जा सकता है। क्योंकि जंग हमेशा ताक़त से ही नहीं बल्कि जिगर और हिम्मत से भी जीती जाती है। इसलिए कहा जाता है कि मन के हारे हार है और मन के जीते जीत।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: (2 X 4 = 8)

(i) खोजपरक पत्रकारिता, विशेषीकृत पत्रकारिता, वॉचडॉग पत्रकारिता, एडवोकेसी पत्रकारिता वैकल्पिक पत्रकारिता आदि।

(ii) **स्वच्छता अभियान**

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा महात्मा गाँधी की 145वीं जयंती के अवसर पर आरंभ किया गया 'स्वच्छ भारत अभियान' अब तक का सबसे बड़ा स्वच्छता अभियान है। गाँधीजी के 'क्विट इंडिया' आह्वान को पूरा करने वाला देश अब उनके 'क्लीन इंडिया' के आह्वान को पूरा करने निकल पड़ा है।

देश को स्वच्छ बनाना सिर्फ किसी सरकार या संगठन की जिम्मेदारी नहीं हो सकती, होनी संभव भी नहीं है। जब तक देश के नागरिक इसके प्रति जागरूक नहीं होंगे, तब तक इस महान् लक्ष्य को प्राप्त करना संभव नहीं है।

हमें स्वच्छता के महत्त्व को समझना होगा। इसके अभाव में यानी गंदगी से होने वाले दुष्प्रभावों को जानना होगा। विश्व पटल पर बनी अपनी गंदगी की छवि को मिटाकर अपनी स्वच्छता-प्रिय छवि को स्थापित करना होगा।

(iii) **सजग नागरिक**

सजग नागरिक का तात्पर्य एक जागरूक नागरिक से है। जागरूक अर्थात् अपने परिवेश में घटित होने वाली सभी घटनाओं से न सिर्फ वह अच्छी तरह परिचित रहे, बल्कि उन परिस्थितियों में अपने दायित्व के प्रति भी अत्यंत संवेदनशील और जागरूक रहे। देश, समाज, समुदाय, समूह, परिवार आदि के बारे में सभी जानकारियों को रखना तथा उनके प्रति अपने दायित्वों को निभाना ही एक सामान्य नागरिक को सजग नागरिक बनाता है। सजगता का मतलब है, सदैव अलर्ट रहना। सजग व्यक्ति ही अपने सभी लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है।

अपने लक्ष्य को लेकर सजग रहने वाला व्यक्ति पूरी चैतन्यता के साथ उससे जुड़ जाता है। उसकी समस्त मानसिक एवं शारीरिक ऊर्जा अपने लक्ष्य को पाने में लग जाती है।अपनी सजगता के कारण ही वो व्यक्ति अपने लक्ष्यों को प्राप्त करता है और अपने कामों को अच्छे से कर पाता है। एक सजग नागरिक हमेशा अपने दायित्वों के प्रति सचेत रहता है। वह चिंतनशील एवं कर्मशील होता है। मनुष्य का सोचना एवं उसके अनुसार व्यवहार करना गतिशील जीवन की पहचान है। एक सजग नागरिक न केवल देश एवं समाज के प्रति अपने दायित्वों का ईमानदारीपूर्वक निर्वाह करता है, बल्कि वह समाज के सभी सदस्यों की बेहतरी के लिए भी चिंतित रहता है। उसकी सजगता स्वयं के साथ-साथ अपने पूरे समाज को बेहतर दिशा की ओर ले जाने के लिए होती है।

सजगता एक ऐसी प्रवृत्ति है, जिसे मनुष्य अपने अंदर विकसित करता है। यह कोई जन्मजात विशेषता नहीं होती, बल्कि स्वयं का समाजीकरण करते हुए अर्जित की जाती है। सजगता वह मार्ग है, जिस पर चलकर मनुष्य अपने जीवन को एक नया अर्थ प्रदान करता है। यह मनुष्य की बेहतर पहचान निर्मित करता है।

कोई भी समाज अपने सजग नागरिकों के बल पर ही आगे बढ़ता है एवं विकास करता है। किसी विशेष परिस्थिति में भी अपनी जिम्मेदारियों को उचित ढंग से समझने वाला और उन जिम्मेदारियों को निभाने वाला नागरिक ही एक सजग नागरिक है। प्रत्येक समाज अपने विकास के लिए ऐसे ही नागरिकों की इच्छा रखता है।हर समाज में व्यक्तियों का सजग होना नितांत आवश्यक है।

(iv)रेडियो नाटक के लिए पात्रों की संख्या सीमित रखनी चाहिए ताकि उनकी आवाज़ और काम को ध्यान से सम्पादित किया जा सके और प्रत्येक पात्र को पर्याप्त समय और महत्व दिया जा सके। साथ ही, यह संख्या रेडियो के तकनीकी और सामग्री की सीमाएँ को ध्यान में रखते हुए निर्धारित की जाती है।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)

(i) विशेष लेखन को सभी पाठक नहीं पढ़ते, प्रत्येक विषय का पाठक वर्ग अलग होता है जैसे समाचार पत्र में कारोबार औए व्यापार का पन्ना कम पाठक पढ़ते हैं लेकिन जो पाठक पढ़ते है उनकी संख्या सामान्य पाठकों से ज्यादा होती है और उनकी उम्मीद होती है कि उनको उनके विषय की ज्यादा से ज्यादा जानकारी मौजूदा समय के हिसाब से मिले।

(ii) समाचार लेखन में छह ककार महत्वपूर्ण हैं -

i. **क्या:** घटना क्या है?
ii. **कौन:** घटना में कौन शामिल हैं?
iii. **कहाँ:** घटना कहाँ हुई?
iv. **कब:** घटना कब हुई?
v. **कैसे:** घटना कैसे हुई?
vi. **क्यों:** घटना क्यों हुई?

समाचार लेखन में ककारों का महत्त्व:

- **स्पष्टता:** छह ककारों का उपयोग करके लिखे गए समाचार लेख स्पष्ट और संक्षिप्त होते हैं।
- **पूर्णता:** छह ककारों का उपयोग करके लिखे गए समाचार लेख घटना के बारे में सभी आवश्यक जानकारी प्रदान करते हैं।
- **सटीकता:** छह ककारों का उपयोग करके लिखे गए समाचार लेख घटना के बारे में सटीक जानकारी प्रदान करते हैं।
- **निष्पक्षता:** छह ककारों का उपयोग करके लिखे गए समाचार लेख निष्पक्ष होते हैं और किसी भी पक्ष का समर्थन नहीं करते हैं।

(iii)संपादक के नाम पत्र संपादकीय पृष्ठ पर स्थायी स्तंभ होते हैं, जिसमें पाठकों के पत्र प्रकाशित होते हैं। इसमें पाठक विभिन्न मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त करते हैं और जन समस्याओं को उठाते हैं। इसके माध्यम से नए लेखकों के लिए लेखन की शुरूआत करने का अवसर मिलता है। इस प्रकार यह एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ है।

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे-
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है?
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है?

(i) **(ग)** प्रत्याशा
व्याख्या:
प्रत्याशा

(ii) **(घ)** नीड़ों से
व्याख्या:
नीड़ों से

(iii) **(घ)** चंचलता
व्याख्या:
चंचलता

(iv) **(घ)** चिड़ियों की
व्याख्या:
चिड़ियों की

(v) **(ग)** विकल्प (i)
व्याख्या:
जल्दी-जल्दी

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) कवि अपने कवि - कर्म को किसान के कृषि कर्म जैसा ही बताता है। कवि कहते हैं कि मैं भी एक प्रकार का किसान हूँ। किसान के खेत के समान उसके पास चौकोर कागज का पन्ना है। जैसे किसान जमीन पर बीज, खाद,जल डालता है उसी प्रकार मैं कागज़ पर शब्द,भाव बोता हूँ। उसके बाद अनाज,फल -फूल की तरह कविता पुष्पित पल्लवित होती है,इस प्रकार कवि काव्य-रचना रूपी खेती के लिए कागज़ के पन्ने को अपना चौकोना खेत कहते हैं।

(ii) यह पंक्तियाँ मानव जीवन के मूल्यों का विवरण करती हैं। ये पंक्तियाँ व्यक्ति को संयम, सद्भाव, न्याय, धैर्य, सामर्थ्य और साझा बंधुत्व की महत्वपूर्णता सिखाती हैं। इन गुणों के पालन से व्यक्ति संतुष्ट, समर्पित और अनुशासित जीवन जी सकता है जो सामाजिक और मानविकी समृद्धि का आधार बनाता है।

(iii) **भाषा को सहूलियत** से बरतने का आशय है- सीधी, सरल एवं सटीक भाषा के प्रयोग से है। भाव के अनुसार उपयुक्त भाषा का प्रयोग करने वाले लोग ही बात के धनी माने जाते हैं। आडंबर रहित, सरलता और बिना किसी लाग -लपेट के कही गयी बात श्रोताओं एवं पाठकों दोनों को प्रभावित करने में सफल होती है।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) 'पतंग' कविता में प्रकृति का चित्रण मनमोहक और जीवंत है। कवि ने प्रकृति के विभिन्न पहलुओं को बड़ी ही खूबसूरती से दर्शाया है। कवि ने आकाश को "खुला नीला मैदान" के रूप में वर्णित किया है, जो पतंगों के लिए उड़ने का एक विशाल स्थान प्रदान करता है। हवा को "मस्त मौसम" के रूप में वर्णित किया गया है, जो पतंगों को उड़ने में मदद करती है। हवा की गति को "तेज" और "जोरदार" बताया गया है, जो पतंगों को ऊंचा उड़ने में सक्षम बनाती है। सूर्य को "लाल सवेरा" के रूप में वर्णित किया गया है, जो आकाश में चमकता है और पतंगों को रंगों से भर देता है। धरती को "खुली धरती" के रूप में वर्णित किया गया है, जो बच्चों को पतंग उड़ाने के लिए पर्याप्त जगह प्रदान करती है। पक्षियों को "पतंगों की तरह" उड़ते हुए दिखाया गया है, जो प्रकृति में जीवंतता का एहसास कराते हैं। बच्चे पतंग उड़ाते हुए खुशी से झूम रहे हैं, जो प्रकृति के साथ उनके संबंध को दर्शाता है।

(ii) प्रश्नकर्ता अपाहिज से उसके विकलांगपन व उससे संबंधित कष्टों के बारे में बार-बार पूछता है, परंतु अपाहिज उनके उत्तर नहीं दे पाता। वास्तविकता यह है कि उसे अपाहिजपन से उतना कष्ट नहीं है जितना उसके कष्ट को बढ़ा-चढ़ाकर बताया जाता है। प्रश्नकर्ता के प्रश्न भी अस्पष्ट हैं तथा जितनी शीघ्रता से प्रश्नकर्ता जवाब चाहता है, उतनी तीव्र मानसिकता अपाहिज की नहीं है। उसने इस कमी को स्वीकार कर लिया है तथा वह अपना प्रदर्शन नहीं करना चाहता।

(iii) व्याख्या- प्रस्तुत पंक्ति में कवि पूँजीपतियों पर व्यंग्य कर रहा है। उसके अनुसार पूँजीपति लोग ऊँची-ऊँची इमारतों में रहते हैं। ये सारी उम्र गरीबों, किसानों तथा मज़दूरों पर अत्याचार करते हैं तथा उनका शोषण करते हैं। अतः उसके लिए पूँजीपतियों के रहने के मकान नहीं हैं, ये आतंक भवन हैं। जिनसे सारे अत्याचारों तथा शोषण का जन्म होता है। कवि आगे कहता है कि लेकिन यह भी स्मरणीय है कि क्रांति का आगाज़ हमेशा गरीबों में ही होता है। ये लोग ही शोषण का सबसे बड़ा शिकार होते हैं। कवि ने इन्हें जल प्लावन की संज्ञा दी है। वह कहता है कि क्रांति रूपी बारिश का पानी जब एकत्र होकर बहता है, तो वह कीचड़ से युक्त पृथ्वी को डूबो देने का सामर्थ्य रखता है। कवि ने पूंजीपतियों को कीचड़ तथा की संज्ञा दी है, जिसे क्रांति रूपी जल-प्लावन डूबो देता है। शोषित वर्ग प्रत्येक परिस्थिति का मुकाबला करने की ताकत रखता है।

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

जाति-प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्व निर्धारण ही नहीं करती, बल्कि मनुष्य को जीवनभर के लिए एक पेशे से बाँध भी देती है। भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखा मर जाए। आधुनिक युग में यह स्थिति प्रायः आती है, क्योंकि उद्योग-धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास और कभी-कभी

अकस्मात् परिवर्तन हो जाता है, जिसके कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है और यदि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनुष्य को अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता न हो, तो इसके लिए भूखा मरने के अतिरिक्त क्या चारा रह जाता है? हिंदू धर्म की जाति-प्रथा किसी भी व्यक्ति को ऐसा पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती है, जो उसका पैतृक पेशा न हो, भले ही वह उसमें पारंगत हो। इस प्रकार पेशा परिवर्तन की अनुमति न देकर जाति-प्रथा भारत में बेरोज़गारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है। (बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर)

(i) **(ग)** सभी विकल्प सही हैं
व्याख्या:
सभी विकल्प सही हैं

(ii) **(ख)** उद्योग-धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास के कारण
व्याख्या:
उद्योग-धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास के कारण

(iii) **(घ)** मनुष्य को भूखा मरना पड़ता है
व्याख्या:
मनुष्य को भूखा मरना पड़ता है

(iv) **(ग)** कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।
व्याख्या:
कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

(v) **(ख)** केवल i
व्याख्या:
केवल i

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) पहलवान लुट्टन के सुख-चैन के दिन तब शुरू हुए जब उसने चाँद सिंह को कुश्ती में हराकर अपना नाम रोशन किया। राजा ने उसे दरबार में रखकर उसका सम्मान किया। इससे उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। पौष्टिक भोजन व राजा की स्नेह-दृष्टि मिलने से उसने सभी नामी पहलवानों को जमीन सुँघा दी। अब वह दर्शनीय जीव बन गया। मेलों में वह लंबा चोगा व अस्त-व्यस्त पगड़ी पहनकर मस्त हाथी की तरह चलता था।

(ii) भक्तिन के साथ रहकर महादेवी की जीवन-शैली सरल हो गयी, वे अपनी सुविधाओं की चाह को छिपाने लगीं और असुविधाओं को सहने लगीं। भक्तिन ने उन्हें देहाती भोजन खिलाकर उनका स्वाद बदल दिया। भक्तिन मात्र एक सेविका न होकर महादेवी की अभिभावक और आत्मीय बन गयी। भक्तिन, महादेवी के जीवन पर छा जाने वाली एक ऐसी सेविका है जिसे लेखिका नहीं खोना चाहती।

(iii) शिरीष की कोमलता एवं कठोरता के गुण का चित्रण करते हुए लेखक को गांधीजी की याद आई। शिरीष के समान ही गांधीजी में भी कठोरता के साथ-साथ कोमलता का गुण विद्यमान था। शिरीष की भाँति ही गांधीजी भी वायुमंडल से, अपने परिवेश से रस खींचकर कोमल एवं कठोर बन गए।

जनसामान्य के साथ कोमलता का व्यवहार करने वाले गांधीजी कभी-कभी देश एवं समाज के हित में अत्यधिक कठोर बन जाते थे। समय के अनुरूप, परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेते हुए गांधीजी को भी स्वतंत्रता आंदोलन को सही ढंग से आगे बढ़ाने के लिए अपने व्यवहार में कोमलता एवं कठोरता दोनों को अपनाना पड़ता था। गांधीजी स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान होने वाली हिंसा, खून-खराबा, अग्निदाह आदि हिंसात्मक गतिविधियों के बीच अहिंसक होते हुए भी शिरीष के समान अटल या स्थिर बने रहते थे।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) लोभ के कारण ही व्यक्ति आकर्षण में फँसता है और उसके मन में इच्छाएँ उत्पन्न होती हैं; जैसे-विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ खरीदना, बाज़ार में घूमने जाना, नए जमाने की नई-नई वस्तुओं का संग्रह करना इत्यादि। इस प्रकार बाज़ार में माँग उत्पन्न होती है। यह लोभ मनुष्य को अंधा कर देता है।

(ii) हमारी कृषि संस्कृति में बैल पुरातन और अविभाजित हिस्सा हैं अर्थात बैल भारतीय कृषि संस्कृति की रीढ़ की हड्डी हैं। किसान बैलों से ही खेतों को जोतकर अन्न उपजाते हैं। उनके प्यासे रहने पर कृषि प्रभावित होती है इसलिए गगरी फूटी बैल पियासा इंदर सेना के इस खेलगीत में बैलों के प्यासा रहने की बात कृषि के संदर्भ में मुखरित हुई है, जब वे तृप्त होंगे तभी खेतों में किसानों की मेहनत को बल मिलेगा और धरती फसलों से सम्पन्न होगी।

(iii) डॉ. आंबेडकर जाति प्रथा को श्रम विभाजन का एक रूप नहीं मानते हैं| इसके लिए उन्होंने निम्नलिखित तर्क दिए हैं-

i. जातिप्रथा के आधार पर श्रम-विभाजन मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं
ii. श्रम के साथ - साथ श्रमिकों का विभाजन
iii. जाति के आधार पर पेशे का दोषपूर्ण निर्धारण कर आजीवन एक पेशे में बाँधना

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) यशोधर बाबू रेम्जे स्कूल की उस आदत को आज भी नहीं छोड़ पाए थे जब जवाब देने वाला अपना एक हाथ आगे बढ़ाता था और सुनने वाला उस पर बतौर दाद अपना हाथ मारता था। इस पर दोनों हँस पड़ते थे। यह आदत आपसी मेलजोल और समरसता बढ़ाने वाली है। बात का व्यंग्य या कटुता इस हँसी में दबकर रह जाती है।

(ii) कविता के प्रति लगाव से पूर्व लेखक को अकेलेपन की पीड़ा और निराशा बहुत सताती थी। उसके मन में अपने ही जीवन के प्रति कोई उत्साह का न होना, इस बात को पुष्ट करता है। कविता के प्रति लगाव के बाद उसे अकेलापन भी अच्छा लगने लगा, वह आशावादी एवं आत्मविश्वासी बन गया। उसे कविता सृजन में किसी प्रकार का विघ्न स्वीकार्य नहीं था। उसे अपने जीवन के प्रति उत्साह और उल्लास भी आ गया क्योंकि

खालीपन, निराशा एवं जीवन की निरर्थकता का द्योतक है, जबकि सृजनशीलता, कमर्ठता अथवा काम में लगे होना जीवन के प्रति आस्था, आशा, आत्म-विश्वास एवं पूर्णता का प्रतीक है।

(iii)मुअनजो-दड़ो की सड़कों और गलियों का विस्तार खंडहरों को देखकर किया जा सकता है। यहाँ हर सड़क सीधी है या फिर आड़ी। चबूतरे के पीछे 'गढ़ उच्च वर्ग की बस्ती, महाकुंड, स्नानागार, ढकी नालियाँ, अन्न का कोठार, सभा भवन, घरों की बनावट, भव्य राजप्रासाद, समाधियाँ आदि संरचनाएँ ऐसे सुव्यवस्थित हैं कि कहा जा सकता है कि शहर नियोजन से लेकर सामाजिक संबंधो तक में इसकी कोई तुलना नहीं है। वर्तमान की सेक्टर-मार्का कॉलोनियों में आड़ा-सीधा नियोजन बहुत मिलता है जो रहन-सहन को नीरस बनाता है तथा इसमें नियोजन के नाम पर हमें अराजकता ज्यादा हाथ लगती है। अतः कहा जा सकता है की आज की सेक्टर-मार्का कॉलोनियां इनके सामने बिलकुल फीकी हैं।